



भारतीय समाज पर वैश्वीकरण का प्रभाव (युवाओं और महिलाओं के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. अनुपम सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर-समाजशास्त्र
लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर राजकीय महिला महाविद्यालय, भरापुरा, अलीगंज, एटा
(उ.प्र.)

Email- anupamsingh384@gmail.com

शोध सार :-

प्रस्तुत शोध पत्र "भारतीय समाज पर वैश्वीकरण का प्रभाव : युवाओं और महिलाओं के विशेष सन्दर्भ में" वैश्विक एकीकरण की प्रक्रिया से उत्पन्न सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों का गहन विश्लेषण करता है। 1991 के आर्थिक सुधारों के पश्चात्, वैश्वीकरण ने भारतीय समाज के पारंपरिक ढाँचे को आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता के नए आयामों से जोड़ दिया। यह शोध विशेष रूप से भारतीय युवाओं और महिलाओं पर केन्द्रित है, क्योंकि ये दोनों वर्ग वैश्वीकरण के सबसे प्रत्यक्ष ग्राहक रहे हैं। युवाओं के सन्दर्भ में, वैश्वीकरण ने जहाँ एक ओर शिक्षा, तकनीक और वैश्विक रोजगार के असीमित अवसर प्रदान किए हैं, वहीं दूसरी ओर 'पश्चिमीकरण' और 'उपभोक्तावाद' के कारण उनके सांस्कृतिक मूल्यों और पहचान में एक द्वंद्व भी उत्पन्न किया है। डिजिटल क्रांति ने युवाओं को 'वैश्विक नागरिक' के रूप में स्थापित किया है, जिससे उनकी आकांक्षाएँ और जीवनशैली वैश्विक मानकों के अनुरूप बदली हैं। महिलाओं के परिप्रेक्ष्य में, वैश्वीकरण ने आर्थिक सशक्तिकरण, श्रम बाज़ार में बढ़ती भागीदारी और सामाजिक अधिकारों के प्रति जागरूकता के माध्यम से पितृसत्तात्मक बाधाओं को चुनौती दी है। हालाँकि यह शोध इस चिन्ता को भी रेखांकित करता है कि वैश्वीकरण के लाभ शहरी क्षेत्रों तक अधिक केन्द्रित हैं, जिससे 'डिजिटल विभाजन' और 'आर्थिक असमानता' जैसी चुनौतियाँ उभर रही हैं। वैश्वीकरण एक 'दुधारी तलवार' की भाँति है, जिसने सशक्तिकरण और प्रगति के द्वार तो खोले हैं, किन्तु सांस्कृतिक विखण्डन और सांस्कृतिक क्षरण के खतरों को भी जन्म दिया है।

मुख्य शब्द : वैश्वीकरण, सामाजिक परिवर्तन, भारतीय युवा, महिला सशक्तिकरण, सांस्कृतिक संक्रमण, उपभोक्तावाद, डिजिटल विभाजन।

प्रस्तावना :-

वैश्वीकरण 21वीं सदी की एक ऐसी अपरिहार्य और बहुआयामी प्रक्रिया है जिसने भौगोलिक सीमाओं को अर्थहीन बनाकर सम्पूर्ण विश्व को एक 'वैश्विक ग्राम' (Global Village) के रूप में संकुचित कर दिया है। भारत के सन्दर्भ में, 1991 के आर्थिक उदारीकरण ने न केवल व्यापार और तकनीक के द्वार खोले, बल्कि भारतीय समाज के पारम्परिक मूल्यों, संरचनाओं और व्यवहारों में भी क्रांतिकारी परिवर्तन का सूत्रपात किया। यह शोध पत्र इस तथ्य का विश्लेषण करता है कि वैश्वीकरण ने भारतीय



समाज के दो सबसे गतिशील स्तम्भों - युवाओं और महिलाओं - को किस प्रकार प्रभावित किया है। भारतीय युवाओं के लिए, वैश्वीकरण ने सूचना प्रौद्योगिकी, वैश्विक शिक्षा और करियर के नए क्षितिज खोले हैं, जिससे वे 'डिजिटल युग' के अग्रदूत बनकर उभरे हैं। जहाँ एक ओर उनकी आकांक्षाएँ वैश्विक हुई हैं, वहीं दूसरी ओर पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव ने उनके पारम्परिक पारिवारिक और सांस्कृतिक पहचान के समक्ष नए द्वंद्व भी उत्पन्न किए हैं। दूसरी ओर, महिलाओं के परिप्रेक्ष्य में वैश्वीकरण एक सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ है। आर्थिक स्वतंत्रता और शिक्षा के विस्तार ने पितृसत्तात्मक ढाँचे की रूढ़ियों को चुनौती दी है, जिससे महिलाओं की सामाजिक स्थिति और निर्णय लेने की क्षमता में गुणात्मक सुधार हुआ है। हालाँकि, यह प्रक्रिया चुनौतियों से मुक्त नहीं है। इसने 'उपभोक्तावाद', 'डिजिटल विभाजन' और 'सांस्कृतिक अलगाव' जैसी समस्याओं को भी जन्म दिया है। यह प्रस्तावना इस विचार को रेखांकित करती है कि वैश्वीकरण केवल एक आर्थिक नीति नहीं, बल्कि एक सामाजिक क्रांति है, जिसने आधुनिकता और परम्परा के मध्य एक नया सन्तुलन बनाने की आवश्यकता उत्पन्न कर दी है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :-

प्रस्तुत शोध विषय पर विभिन्न समाजशास्त्रियों और विद्वानों ने व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। प्रसिद्ध समाजशास्त्री एन्थनी गिडेन्स ने अपनी कृतियों में वैश्वीकरण को 'दूरी का अन्त' मानते हुए इसे परम्परा और आधुनिकता के बीच एक निरन्तर चलने वाला द्वंद्व बताया है। भारतीय सन्दर्भ में, प्रो. योगेन्द्र सिंह का मानना है कि भारतीय समाज ने वैश्वीकरण को पूरी तरह आत्मसात करने के बजाय उसका 'स्वदेशीकरण' किया है, जिसे उन्होंने 'संस्कृति का आधुनिकीकरण' की संज्ञा दी है। उनके अनुसार, भारतीय युवा अपनी जड़ों से जुड़े रहकर भी वैश्विक तकनीक को अपना रहे हैं।

युवाओं के सन्दर्भ में, अर्जुन अप्पादुरई के 'सांस्कृतिक प्रवाह' (Cultural Flows) के सिद्धान्त से यह स्पष्ट होता है कि मीडिया और संचार क्रांति ने युवाओं की आकांक्षाओं को वैश्विक स्तर पर पहुँचा दिया है। हालाँकि, कुछ विद्वानों ने 'सांस्कृतिक साम्राज्यवाद' की चेतावनी भी दी है, जहाँ पश्चिमी उपभोक्तावादी संस्कृति स्थानीय मूल्यों को प्रभावित कर रही है। महिलाओं के पक्ष में, निर्मला बनर्जी और मैत्रेयी चौधरी जैसे शोधकर्ताओं ने स्पष्ट किया है कि वैश्वीकरण ने सेवा क्षेत्र (Service Sector) में रोजगार के नए अवसर प्रदान कर महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाया है। लेकिन साथ ही, वंदना शिवा जैसे विचारकों ने यह तर्क भी दिया है कि वैश्वीकरण ने ग्रामीण और शहरी महिलाओं के बीच एक 'डिजिटल और आर्थिक खाई' पैदा की है। उपलब्ध साहित्य यह संकेत देता है कि वैश्वीकरण ने सशक्तिकरण के द्वार तो खोले हैं, परन्तु इसने सामाजिक स्तरीकरण और सांस्कृतिक पहचान के नए संकट भी उत्पन्न किए हैं।

शोध की परिकल्पना :-

एक शोध पत्र में परिकल्पना वह अनुमानित निष्कर्ष होता है जिसे हम शोध के माध्यम से सिद्ध करने का प्रयास करते हैं।



सकारात्मक परिकल्पना : वैश्वीकरण ने भारतीय युवाओं के लिए वैश्विक करियर के अवसर पैदा किए हैं और महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाकर समाज में उनकी स्थिति को मजबूत किया है।

द्विधात्मक परिकल्पना : वैश्वीकरण के कारण भारतीय युवाओं में आधुनिकता और पारम्परिक मूल्यों के बीच एक वैचारिक द्वंद्व उत्पन्न हुआ है, जिससे उनकी जीवनशैली और सामाजिक व्यवहार में बदलाव आया है।

असमानता की परिकल्पना : वैश्वीकरण का लाभ मुख्य रूप से शहरी और शिक्षित युवाओं एवं महिलाओं तक सीमित रहा है, जिससे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच एक 'डिजिटल' और 'सामाजिक' विभाजन बढ़ा है।

शोध के उद्देश्य :-

निम्नलिखित मुख्य उद्देश्य हैं :-

1. भारतीय समाज में वैश्वीकरण के कारण आए संरचनात्मक और सांस्कृतिक परिवर्तनों की पहचान करना।
2. वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में युवाओं की बदलती आकांक्षाओं, शिक्षा और रोजगार के प्रति उनके दृष्टिकोण का विश्लेषण करना।
3. महिलाओं के सशक्तिकरण, उनकी आर्थिक स्वायत्तता और पारिवारिक निर्णय प्रक्रिया में उनकी भूमिका पर वैश्वीकरण के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
4. वैश्वीकरण से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों, जैसे - सांस्कृतिक क्षरण और उपभोक्तावाद के प्रभावों का अध्ययन करना।

युवाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव का विश्लेषण :-

वैश्वीकरण ने 21वीं सदी के भारतीय युवाओं के जीवन को पूरी तरह से पुनर्गठित कर दिया है। यह प्रभाव केवल आर्थिक नहीं, बल्कि गहरे सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी देखा जा सकता है। हमारे शोध के उद्देश्यों और परिकल्पनाओं के आलोक में इसका विस्तृत वर्णन निम्नलिखित है :-

1. वैश्विक करियर और आर्थिक अवसर
(उद्देश्य और सकारात्मक परिकल्पना के आधार पर)

शोध की पहली परिकल्पना के अनुसार, वैश्वीकरण ने युवाओं के लिए करियर के असीमित द्वार खोले हैं। सूचना प्रौद्योगिकी (IT), बीपीओ (BPO), और ई-कॉमर्स जैसे क्षेत्रों के उदय ने 'गिग इकोनॉमी' (Gig Economy) को जन्म दिया है। आज का भारतीय युवा केवल स्थानीय नौकरियों पर निर्भर नहीं है, वह फ्रीलांसिंग और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से वैश्विक कम्पनियों के लिए काम कर रहा है। इससे न केवल उनकी आय में वृद्धि हुई है, बल्कि उनके पेशेवर कौशल (Professional Skills) में भी वैश्विक स्तर का सुधार आया है। स्टार्टअप संस्कृति और नवाचार के प्रति बढ़ता झुकाव



इस बात का प्रमाण है कि युवा अब 'नौकरी माँगने वाले' के बजाय 'नौकरी देने वाले' बनने की आकांक्षा रखते हैं।

2. पहचान का संकट और वैचारिक द्वंद्व (द्वंद्वतात्मक परिकल्पना के आधार पर)

हमारी दूसरी परिकल्पना 'आधुनिकता बनाम परम्परा' के द्वंद्व को रेखांकित करती है। वैश्वीकरण ने युवाओं की जीवनशैली, खान-पान और पहनावे में व्यापक बदलाव लाया है। सोशल मीडिया और वैश्विक ओटीटी (OTT) प्लेटफॉर्मों ने उन्हें पश्चिमी संस्कृति के बहुत करीब ला दिया है। इसके परिणामस्वरूप, युवाओं में 'हाइब्रिड पहचान' (Hybrid Identity) विकसित हुई है। वे एक ओर तो आधुनिक तकनीक और वैश्विक फैशन को अपनाते हैं, लेकिन दूसरी ओर अपने पारम्परिक मूल्यों, त्योहारों और पारिवारिक रीति-रिवाजों से भी जुड़े रहना चाहते हैं। यह द्वंद्व कभी-कभी वैचारिक भ्रम और मानसिक तनाव को जन्म देता है, जिसे समाजशास्त्री 'सांस्कृतिक विलम्बना' (Cultural Lag) के रूप में देखते हैं।

3. शिक्षा और डिजिटल साक्षरता (शोध उद्देश्यों के आधार पर)

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप शिक्षा का लोकतंत्रीकरण हुआ है। 'डिजिटल इंडिया' जैसे अभियानों और वैश्विक ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्मों ने ज्ञान को सीमाओं से मुक्त कर दिया है। अब एक छोटे कस्बे का छात्र भी हार्वर्ड या एमआईटी के पाठ्यक्रमों तक पहुँच सकता है। इससे युवाओं की तार्किक क्षमता और वैश्विक दृष्टिकोण विकसित हुआ है। हालाँकि, यह शिक्षा प्रणाली प्रतिस्पर्धी भी हो गई है, जिससे युवाओं पर निरन्तर बेहतर प्रदर्शन करने का दबाव बढ़ा है।

4. उपभोक्तावाद और जीवनशैली में बदलाव

वैश्वीकरण ने युवाओं को 'उपभोक्तावादी संस्कृति' का मुख्य केन्द्र बना दिया है। विज्ञापनों और ब्राण्ड्स के प्रति बढ़ता आकर्षण उनकी जीवनशैली का हिस्सा बन गया है। अब सफलता का पैमाना केवल ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन स्तर और उपभोग की वस्तुओं (जैसे स्मार्टफोन, गैजेट्स, फैशन) से मापा जाने लगा है। इसका सकारात्मक पक्ष यह है कि यह आर्थिक चक्र को गति देता है, लेकिन नकारात्मक पक्ष यह है कि यह युवाओं में अनावश्यक भौतिकवादी प्रतिस्पर्धा को जन्म देता है।

5. सामाजिक और डिजिटल विभाजन (असमानता की परिकल्पना के आधार पर)

हमारी तीसरी परिकल्पना के अनुसार, वैश्वीकरण के लाभ समान रूप से वितरित नहीं हुए हैं। जहाँ शहरी क्षेत्रों के युवाओं को इसका भरपूर लाभ मिला है, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों के युवा अभी भी 'डिजिटल डिवाइड' (Digital Divide) का शिकार हैं। इंटरनेट की गति, अंग्रेजी भाषा पर पकड़ और आधुनिक तकनीक तक पहुँच की कमी के



कारण एक बड़ा वर्ग इस वैश्विक दौड़ में पीछे छूट रहा है। यह सामाजिक और आर्थिक असमानता भविष्य में एक बड़ी चुनौती बन सकती है।

महिलाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव का विश्लेषण :-

वैश्वीकरण ने भारतीय समाज में महिलाओं की पारम्परिक भूमिकाओं को पुनर्गठित करने में एक उत्प्रेरक का कार्य किया है। घरेलू चारदीवारी से वैश्विक कार्यबल तक की उनकी यात्रा इस प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक परिणाम है।

1. आर्थिक स्वायत्तता और श्रम बाज़ार में भागीदारी
(सकारात्मक परिकल्पना के आधार पर)

शोध की पहली परिकल्पना के अनुसार, वैश्वीकरण ने महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाकर उनकी सामाजिक स्थिति को सुदृढ़ किया है। सूचना प्रौद्योगिकी, बीपीओ और सेवा क्षेत्र के विस्तार ने विशेष रूप से शिक्षित महिलाओं के लिए रोजगार के नए द्वार खोले हैं। वित्तीय स्वतंत्रता ने महिलाओं की 'सौदेबाजी की शक्ति' (Bargaining Power) को बढ़ाया है, जिससे वे अब अपने जीवन और परिवार से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम हैं। यह न केवल उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है, बल्कि पितृसत्तात्मक समाज में उनकी अधीनता को भी कम करता है।

2. शिक्षा, जागरूकता और अधिकारों के प्रति चेतना
(शोध उद्देश्यों के आधार पर)

वैश्वीकरण और डिजिटल क्रांति ने महिलाओं के लिए सूचनाओं के द्वार खोल दिए हैं। वैश्विक आंदोलनों (जैसे शिक्षा का अधिकार, लैंगिक समानता) के प्रभाव और इंटरनेट की सुलभता ने भारतीय महिलाओं को उनके कानूनी और सामाजिक अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक बनाया है। आज की महिला न केवल अपने अधिकारों के लिए मुखर है, बल्कि वह स्वास्थ्य, स्वच्छता और प्रजनन अधिकारों (Reproductive Rights) के प्रति भी सचेत हुई है। शिक्षा के बढ़ते प्रसार ने ग्रामीण महिलाओं को भी स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से वैश्विक बाजारों से जोड़ा है।

3. सामाजिक संरचना और पारिवारिक परिवर्तन
(द्वंद्वतात्मक परिकल्पना के आधार पर)

हमारी दूसरी परिकल्पना 'आधुनिकता और परम्परा' के बीच के संघर्ष को दर्शाती है। वैश्वीकरण ने 'संयुक्त परिवारों' के स्थान पर 'एकल परिवारों' (Nuclear Families) को बढ़ावा दिया है। इससे महिलाओं को अधिक स्वतंत्रता तो मिली है, लेकिन उनके ऊपर 'दोहरा बोझ' (Double Burden) भी बढ़ा है। आज की कामकाजी महिला को वैश्विक कार्यस्थल की प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ घर की पारम्परिक जिम्मेदारियों को भी निभाना पड़ता है। यह स्थिति अक्सर शारीरिक और मानसिक तनाव का कारण बनती है, जिसे समाजशास्त्री 'भूमिका संघर्ष' (Role Conflict) कहते हैं।

4. सांस्कृतिक प्रभाव और नई पहचान



वैश्वीकरण ने महिलाओं की 'छवि' को भी बदला है। मीडिया और विज्ञापनों ने एक 'नई आधुनिक महिला' की कल्पना को जन्म दिया है जो आत्मनिर्भर और उपभोक्तावादी है। जहाँ एक ओर यह सशक्तिकरण का प्रतीक है, वहीं दूसरी ओर इसने सौन्दर्य के वैश्विक मानकों और पश्चिमी जीवनशैली के प्रति एक आकर्षण पैदा किया है, जिससे पारम्परिक सांस्कृतिक मूल्यों के साथ टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है।

5. डिजिटल विभाजन और ग्रामीण चुनौतियाँ (असमानता की परिकल्पना के आधार पर)

हमारी तीसरी परिकल्पना के अनुसार, वैश्वीकरण का लाभ सभी महिलाओं को समान रूप से नहीं मिला है। शहरी, उच्च-मध्यम वर्गीय और शिक्षित महिलाओं ने जहाँ वैश्विक अवसरों का लाभ उठाया है, वहीं ग्रामीण और श्रमिक वर्ग की महिलाएँ अभी भी इस प्रक्रिया से दूर हैं। संसाधनों की कमी, भाषायी बाधा (अंग्रेजी का ज्ञान न होना) और तकनीकी शिक्षा के अभाव ने एक 'लैंगिक डिजिटल विभाजन' (Gender Digital Divide) पैदा कर दिया है। ग्रामीण क्षेत्रों में वैश्वीकरण ने कभी-कभी स्थानीय कुटीर उद्योगों को नुकसान पहुँचाया है, जिससे वहाँ की महिलाओं की आर्थिक स्थिति प्रभावित हुई है।

निष्कर्ष :-

भारतीय समाज के सन्दर्भ में वैश्वीकरण एक ऐसी जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया सिद्ध हुई है जिसने युवाओं और महिलाओं के जीवन को बुनियादी रूप से पुनर्गठित किया है। युवाओं के लिए इसने वैश्विक अवसरों, तकनीकी नवाचार और 'डिजिटल नागरिकता' के द्वार खोले हैं, जिससे उनकी आकांक्षाएँ अब भौगोलिक सीमाओं से परे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। हालाँकि, इसके साथ ही तीव्र प्रतिस्पर्धा, उपभोक्तावाद और पारम्परिक सांस्कृतिक मूल्यों के क्षरण जैसी चुनौतियों ने युवाओं के समक्ष पहचान का संकट भी उत्पन्न किया है। दूसरी ओर, महिलाओं के परिप्रेक्ष्य में वैश्वीकरण एक क्रांतिकारी शक्ति बनकर उभरा है, जिसने उन्हें आर्थिक स्वायत्तता और सामाजिक अधिकारों के प्रति जागरूक बनाकर पितृसत्तात्मक बेड़ियों को ढीला करने में मदद की है। सूचना प्रौद्योगिकी और सेवा क्षेत्र में उनकी बढ़ती भागीदारी ने न केवल उनके आत्मविश्वास को बढ़ाया है, बल्कि परिवार और समाज में उनके निर्णय लेने की क्षमता को भी सुदृढ़ किया है। किन्तु, इसके नकारात्मक पक्ष के रूप में 'दोहरा कार्यभार' (घर और कार्यस्थल) और ग्रामीण-शहरी महिलाओं के बीच बढ़ता 'डिजिटल विभाजन' एक गम्भीर चिन्ता का विषय है। अतः यह स्पष्ट है कि वैश्वीकरण ने जहाँ सशक्तिकरण और आधुनिकता के नए आयाम स्थापित किए हैं, वहीं इसने सामाजिक और आर्थिक असमानता की नई खाई भी पैदा की है। भविष्य की राह इसी में निहित है कि हम वैश्वीकरण के लाभों को समावेशी बनाएँ और अपनी सांस्कृतिक जड़ों को अक्षुण्ण रखते हुए वैश्विक प्रगति के साथ सामंजस्य स्थापित करें, ताकि भारतीय युवा और महिलाएँ एक संतुलित और सशक्त भविष्य की ओर अग्रसर हो सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-



1. अप्पादुरई, ए. (1996). *मॉडर्निटी एट लार्ज : कल्चरल डाइमेंशन्स ऑफ ग्लोबलाइजेशन*. मिनेसोटा विश्वविद्यालय प्रेस।
2. कुरुविला, एम. (2006). "ग्लोबलाइजेशन एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन इंडियन कल्चर", जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज़।
3. गिडेन्स, ए. (2002). *रनअवे वर्ल्ड : हाउ ग्लोबलाइजेशन इज रीशेपिंग आवर लाइव्स*. न्यूयॉर्क : रूटलेज।
4. चौधरी, एम. (2004). *फेमिनिज्म इन इंडिया*. ज़ेड बुक्स प्रकाशन।
5. बनर्जी, एन. (1991). *इंडियन वीमेन इन ए चेंजिंग इंडस्ट्रियल सिनेरियो*. सेज पब्लिकेशन्स।
6. मजूमदार, एम. (2012). *ग्लोबलाइजेशन, एजुकेशन एंड INDIA*. रूटलेज।
7. शिवा, वि. (2005). *अर्थ डेमोक्रेसी : जस्टिस, सस्टेनेबिलिटी एंड पीस*. साउथ एंड प्रेस।
8. शर्मा, के.एल. (2007). *सोशल स्ट्रैटिफिकेशन इन INDIA*. रावत पब्लिकेशन्स।
9. सिंह, वाई. (2000). *कल्चर चेंज इन INDIA : आइडेंटिटी एंड ग्लोबलाइजेशन*. रावत पब्लिकेशन्स।
10. सेन, ए. (2005). *द आर्ग्युमेंटेटिव इंडियन : राइटिंग्स ऑन इंडियन हिस्ट्री, कल्चर एंड आइडेंटिटी*. लंदन : पेगुइन बुक्स।